International Journal of Applied Research 2018; 4(9): 46-48

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(9): 46-48
www.allresearchjournal.com
Received: 16-07-2018
Accepted: 26-08-2018

डॉ. रंजना ग्रेवर
सह–आचार्य (संगीत)
सी.एम.के. नेषनल पी.जी. गर्ल्ज कॉलेज, सिरसा, हरिद्वार, उत्तराखंड, भारत

Corresponding Author:
डॉ. रंजना ग्रेवर
सह–आचार्य (संगीत)
सी.एम.के. नेषनल पी.जी. गर्ल्ज कॉलेज, सिरसा, हरिद्वार, उत्तराखंड, भारत

भारतीय संगीत में मुस्लिम समुदाय का योगदान

डॉ. रंजना ग्रेवर

सारांश
भारतीय संगीत में मुस्लमानों का क्या एवं कैसा योगदान था, इस विषय पर चर्चा करने से पूर्व यह जान लेना उचित होगा कि मुस्लमानों के भारत आगमन से पूर्व भारतीय संगीत की क्या दशा थी? संगीत का तब प्रयोजन क्या था एवं मुस्लिम शासन–काल में भारतीय संगीत किस अवस्था में पहुँच गया अर्थात् मुगलों के आने से भारतीय संगीत पर क्या प्रभाव पड़ा? इन दोनों पक्षों के तुलनात्मक अध्ययन से ही हम सच्चाई की तह तक पहुँच सकते हैं।

मुख्य बिन्दुः भारतीय संगीत, वैदिक युग, मुस्लिम समुदाय, सामगान

प्रस्तावना

भारतीय संगीत की प्राचीन परम्परा

संगीत की परम्परा भारत में अति प्राचीन है। यह सर्वाविदित है कि भारतीय संगीत का जन्म वैदिक युग में हुआ। अनेक अन्य विधाओं के समान, संगीत का उद्गम स्थान भी वेद ही है। चारों वेदों में सामवेद पूर्णता संगीतमयी है। भारतीय संगीत की प्राचीन परम्परा के अंतर्गत सामगान का उल्लेख भी मिलता है। ऋचाओं के संगीतमयी पारायण से ही, सामगान का प्रथम विकास, ऋषियों द्वारा किया गया। साम संगीत के बाद ही ध्रुवा–गीतियों एवं मान विधाओं का प्रचार हुआ। भारतीय संगीत की प्राचीन परंपरा से यह बात स्पष्ट होती है कि भारतीय संगीत का विकास मुख्य 2 धाराओं में हुआ मार्गीय संगीत 2. देशी संगीत।

प्राचीन परम्परा के अनुसार संगीत का उद्देश्य, लोकरंजन के साथ–साथ मोक्ष प्राप्ति भी माना गया अर्थात् प्राचीन मार्गीय संगीत यदि मोक्ष प्राप्ति का साधन था तो वहीं देशी–संगीत जनता के मनोरंजन हेतु प्रयुक्त होता था परन्तु मनोरंजन करते हुए भी उसका नैतिक स्तर उच्चकोटि का था। दूसरे शब्दों में तब संगीत चाहे लोगों की मनोवृत्तियों को कभी नीचा नहीं गिरने दिया।

मुस्लिम प्रवेश काल में संगीत

भारत से संबंद्ध विदेशी मुस्लमानों को हम 3 वर्गों में बांट सकते है–

1. प्रथम तो वे अरब मुस्लमान जो समुद्र मार्ग से व्यापर के लिए कराची आते थे तथा समुद्र के साथ–साथ दक्षिणी भारत होते हुए अन्य देशों तक अपना माल ले जाते थे। इन्हें हम अरबी मुस्लमान कहेंगे।
2. दूसरे वो मुस्लमान थे, जिन्होनें हत्या, लूटमार, मंदिरों के विनाश आदि प्रयोजन से लोभ एवं धर्मोन्माद से वशीभूत होकर, भारत पर आक्रमण किए। इनका लक्ष्य भारत में ना ही शासन करना था एवं ना ही इस्लाम का प्रचार करना था, लूटमार ही इनका एकमात्र ध्येय था।
3. तीसरे वर्ग में वे मुस्लमान आते हैं जिनका ध्येय, भारत पर शासन करना, इस्लाम धर्म का प्रचार करना, संगीतकला, चित्रकला, भवननिर्माण कला तथा अन्य कलाओं को प्यार करना, उनका उत्थान करना अर्थात् कला, कलाकार एवं कलापारखियों को सम्मानित करना था।

800 से 1300 शताब्दियों तक भारत पर मुगलों के निरंतर आक्रमण होते रहे जिनसे भारत अपनी पूर्ण रक्षा न कर सका। भारत का हर क्षेत्र लगभग अव्यवस्थित था, फिर संगीत सुव्यवस्थित कैसे रह सकता था। मुस्लिम संस्कृति ने मानव जीवन में प्रवेश कर लिया था। श्रृंगारिक वातावरण, भोग विलास प्रधान वायुमंडल, जो एकदम बाहर से आया था, भारतीय संगीत में समाविष्ट होने लगा। फलःस्वरूप भारतीय संगीत का रूप विकृत होने लगा एवं संगीत की पवित्रता धीरे–धीरे लुप्त होने लगी। संगीत अपना शुद्ध भारतीय रूप खो बैठा। इस संबंध में 'कैप्टन डे' ने अपनी पुस्तक डनेपब –ैवनजीमतद प्दकपं में लिखा है कि "भारतीय संगीत का सबसे समृद्धिशाली युग, मुस्लमानों की

विजय से पूर्व, स्थानीय भाषाओं का काल रहा। मुस्लमानों के आगमन के साथ ही संगीत पतनोमुख हुआ और यह तो आश्चर्यजनक है कि फिर भी उसका अपना अस्तित्व आज तक बना रहा।"

आचार्य बृहस्पति के अनुसार "सजीव वस्तुओं का चित्रण इस्लाम धर्म के विरूद्ध है। फलतः मानव का स्वाभाविक चित्रण प्रेम मुस्मलमानों के साधनों, बेलबूटे, पच्चीकारी एवं कसीदाकारी के रूप में फूटा। यह प्रवृति उनकी स्थापत्य कला पर भी दिखाई देती है। उनकी बनाई इमारतों के कोने –कोने में बारीक से बारीक पच्चीकारी का काम दिखाई देता है। संगीत के क्षेत्र में भी उनकी इस अलंकार प्रियता ने कला के हृदय पर नहीं बल्कि मस्तिष्क पर प्रभाव डालने वाली वस्तु बना दिया। कंठ की तैयारी इन लोगों का लक्ष्य हो गया। राग का स्वभाव भले ही गंभीर हो परन्तु उसे ताने मार–मार कर अति द्रुत लय तक पहुँचा देना शान की बात थी। गायकों एवं वादकों का पारस्परिक सामंजस्य समाप्त हो गया। गायक को ना गाने देना, वादक की श्रेष्ठता थी एवं वादक को न बजाने देना गायक का कमाल।"

उपरोक्त वर्णित विद्वानों से भी यही निष्कर्ष निकलता है कि जिस संगीत पर भारतीयों को सदैव गर्व रहा, जो मोक्ष प्राप्ति का साधन था वही संगीत कुछ व्यक्तियों को हाथों की कठपुतली बन गया। भारतीय संगीत की गौरवमयी की गौरवमयी परंपरा,जो हजारों वर्षों की तपस्या, निरंतर साधना का परिणाम थी, उन्हें मुस्लमानों ने जब जैसा चाहा, अपने रंग में ढाल लिया। इसमें जैसा भी परिवर्तन उन्होनें किया, इन पर आश्रित कलाकारों ने फिर भी इसकी दाद दी, जिससे मुस्लमानों का संगीत में मनमाना परिवर्तन करने का हौंसला और बुलंद होता गया।

भारतीय संगीत–शास्त्री, मुस्लमानों को वेदमूलक, पवित्र, साधना प्रधान संगीत जैसी विद्या सिखाने के लिए प्रस्तुत भी न हो सकते थे और न ही सर्वसाधारण मुस्लमाल उसे, भारतीय के मुख से, धार्मिक आवरण के लिपटे हुए रूप में सीखने के इच्छुक थे। अतः इन हालातों में भारतीय संगीत अपनी सात्विकता को कायम न रख सका। अति–सूक्ष्म, संवेदनशील, हृदयग्राही भावनाओं से भरा, भारतीय संगीत, मुस्लमानों की अलंकारप्रियता के कारण, केवल चमत्कार प्रदर्शन वाला संगीत अपने मूल उद्देश्य से भ्रमित तो हुआ ही, जनता के निम्नस्तर के मनोरंजन का साधन भी बन गया। "सुर, सुरा, सुंदरी" केवल यही तीन शब्द इस बात के साक्षी हैं कि इस युग में संगीत अपनी पवित्रता एवं प्राचीन गौरव खो बैठा।

उपरोक्त वर्णन से एक तरफा पक्ष ही स्पष्ट होता है कि मुसिल्म काल में संगीत अपने धार्मिक आवरण से निकलकर किस ढंग से परिवर्तित होकर किस स्तर पर पहुंचा परन्तु यदि हम मुस्लमानों की भारतीय संगीत को महत्वपूर्ण देन के दूसरे पक्ष पर विचार करें तो यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि मुस्लमान राजाओं ने अपनी संगीतप्रियता के कारण, भारतीय संगीत के प्रचार–प्रसार में कहाँ तक, कितना एवं किस रूप में योगदान दिया?

मुस्लमानों की भारतीय संगीत की देन

संगीत के मुगलकालीन इतिहास पर दृष्टिपात करें तो यह स्पष्ट होता है कि संगीतातिहास के स्वर्णयुग कहे जाने वाले काल में प्रथम मुस्लिम शासक 'अलाउद्दीन खिलजी' थे जिन्हें संगीत में विशेष रूचि थी। खिलजी ने भारतीय संगीतकारों, कलाकारों को पूरा मान–सम्मान तथा राजाश्रय दिया। अमीर खुसरो एवं गोपाल नायक इनके विशिष्ट दरबारी आश्रित कलाकार थे।

खुसरो के संगीत में क्रांतिकारी मधुर परिवर्तनों के लिए संगीत जगत इनका युगों–2 तक आभारी रहेगा। खुसरो ही पहले तुर्क थे जिन्होंने अपने देश के रागों को, भारतीय संगीत में मिलाकर उसे एक नया रूप प्रदान किया। खुसरो ने तत्कालीन जनरूचि को समझकर अनेक नए जीलफ, साजगिरी, सरपर्दा, यमन, पूर्वी, रात की दूरिया, री तोड़ी मजब बनाए। अनेक नई तालों की रचना की यथाः सवारी को झूमरा, सूलफारन, फरोदस्त,रूपक आड़ाचौताल, जल्दत्रिताल मजबण ने अनेक नवीन गान–प्रकार भी अविष्कृत किए यथा– कव्वाली, तराना, खमसा, गजल, सोहला, छोटा ख्याल आदि। नवीन वाद्यों सितार तबला आदि बनाए एवं अपनी समस्त नवीन खोजों के बादशाह अलाउद्दन से भरपूर सहयोग, प्रोत्साहन एवं सम्मान पाया। अमीन एवं खुसरो के प्रयासों से ही तत्कालीन समाज में उपरोक्त सभी प्रचलित होकर लोकप्रियता ग्रहण करती चली गई तथा खुसरो द्वारा काव्य, राग, ताल, वाद्य एवं गायन शैलियाँ आज तक प्रचलित एवं लोकप्रिय है। खुसरो ने भारतीय संगीत पर कुछ ग्रंथ तथा ध्रपद भी रचे। खुसरो अरबी एवं फरसी भाषाओं के विद्वान थे परन्तु खुसरो ने मुस्लमान होते हुए भी, अपनी समस्त नवीन राग, ताल, गानशैलियों में भारतीय मूल के ही स्वर, अंकों, भाषाओं का प्रयोग किया।

खुसरो निसंदेह युग–परिवर्तक थे। भारतीय संगीत में उनका महत्व भी है कि उन्होनें भारतीय विद्वानों को 12 स्वरो वाली 'मुकाम पद्यति' ओर मोड़ दी। इस दृष्टि से क्या भातखंडे और क्या मेलवादि व्यवंटमखी खुसरो के अनुयायी हैं। उनकी भारतीय संगीत को सभी देने अविस्मरणीय है।

मध्यकाल में 15वीं शताब्दी के लगभग, जौनपुर के राजा सुल्तान हुसैन शर्की भी, अत्याधिक संगीत–प्रेमी मुस्लमान बादशाह थे जिन्हें कुछ विद्वानख्याल गायकी का आविष्कारक भी मानते हैं। इन्होनें भी कई गए राग– जौनपुरी, सिंधुभैरवी, सिंधूरा, रसूलतोड़ी आदि बनाए जिनमें जौनपुरी आज भी बेहद लोकप्रिय राग है।

इनके बाद मुस्लिम बादशाह अकबर हुए जिनके काल में भारतीय संगीत अपनी लोकप्रियता की बुलंदियों पर था। इनका काल भारतीय संगीत का वास्तविक स्वर्ण युग है। अकबर जैसे धर्मनिर्पेक्ष मुस्लमान बादशाह ने स्वयं मुस्लमान होते हुए भी भारत के अन्य धर्मों को पूर्ण आदर दिया तथा इस्लाम धर्म का भी खूब प्रचार किया। अबकर ने इमारतें बनवाकर, भवन निर्माणकला, चित्रकला एवं उत्कृष्ट कलाकारी एवं कलाकारों को जहाँ प्रोत्साहित व सम्मानित किया वहीं संगीतकारों को भी राजाश्रय प्रदान किया। जन्म से हिन्दू तानसेन जैसे संगीत सूर्य को बिना धार्मिक भेदभाव के अपने नवरत्नों में सम्मान दिया। बैजू बावरा, बजरंग खाँ, रामदास आदि भी अकबर के आश्रित संगीतकार थे जिन्हें अकबर के मुख्य 36 संगीतज्ञों में स्थान प्राप्त था। तानसेन ने अकबर के राजाश्रय में ही मियाँ की तोड़ी, मियाँ मल्हार, मियाँ की सारंग, दरबारी जैसे प्रसिद्ध राग रचे जो आज भी लोकप्रिय हैं। तानसेन ने कई ध्रपुद एवं ग्रथ भी रचे। राजा की अपार कृपा होने पर भी तानसेन ने अपने ध्रुपदों में भारतीय भाषाओं का ही प्रयोग किया। उर्दू या अरबी–फारसी का नहीं। बैजूबांवरा इसी काल में 'होरी' नामक गायन शैली खोजी एवं प्रचलित धमार गायकी आविष्कारक भी बैजू ही माने जाते हैं। इसी दौरान ग्वालियर नरेष राजा मानसिंह तोमर ने ग्वालियर घराने एवं ध्रपद गायकी की उत्पत्ति की। भारतीय संगीत का प्रसार–प्रचार किया।

अकबर के काल में ही भक्ति–आंदोलन भी चला। गुरू, नानक, मीरा, तुलसीदास, कबीरदास, सूरदास, रविदास जैसे भारतीय भक्तों ने विभिन्न भारतीय भाषाओं में प्रभु की भक्ति में बाणी, दोहे, काव्य एवं विभिन्न रचनाएँ रची तथा भारतीय समाज को जा–जाकर संगीतारस में प्रभुवाणी लिपटाकर, रसायन करवाया परन्तु स्वर मुस्लमान बादशाह ने धार्मिक भेदभावों से ऊपर उठकर एक हिन्दु–संतों द्वारा रचित एवं प्रचारित भक्तवाणी को सराहा तथा निरूतसाहित कर उनका दमन करने की चेष्टा नहीं की।

18वीं शताब्दी के पूर्वाद्यद में मुस्लमानों के अंतिम बादशाह मोहम्मदशाह हुए। संगीत प्रेमी होने के कारण ही इनके काल में भी संगीत खूब फूला/राजा स्वयं भारतीय संगीत की ख्याल गायन शैली में क्षण थे। इनके दरबार में नियामत खाँ एवं भूपद खाँ (अदारंग–सदारंग) भाइयों ने हजारो ख्याल रचकर, अपने शिष्यों को सिखाकर, बालगायकी को अति लोकप्रिय बनाया।

'रंगीले राजा' के समय में ही मियाँ गुलाम नबी शोरी ने टप्पे व ठुमरी गायकी का आविष्कार कर उसे लोकप्रिय बनाया जा आज भी प्रचलित है। संगीत प्रेमी वाजिद अली शाह ने भी संगीत का काफी प्रचार किया तथा मुस्लमान होकर भी 'अख्तर दोया के नाम से अनेकों ठुमरियाँ रची जिन्हें भारतीय समाज एवं संगीतज्ञों ने खूब अपनाया।

निष्कर्ष

उपरोक्त समस्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि वर्तमान युग में संगीत जगत में जो राग, ताल, वाद्य या गायन शैलियाँ प्रचलित हैं, उनमें अधिकतर मुसलमानों की ही देन है। ख्याल, ठुमरी, टप्पा, गजल, कव्वाली, तराना, सितार, तबला सभी तो आजकल लोकप्रिय हैं। जिस भारतीय संगीत के मोक्षप्राप्ति पावन रूप पर हमें गर्व था वह तो अब केवल कल्पना ही लगती है परन्तु मुस्लमानों द्वारा आविष्कृत प्रदत्त आधुनिक मिश्रित संगीत का जो रूप आज हमारे सामने है वह भी कम रोचक नहीं है। अतः यह कहना कि मुस्लमानों ने भारतीय समाज एवं संगीत–जगत के मोक्षप्राप्ति पावन–रूप पर हमें गर्व था, वह जो अब केवल कल्पना ही लगती है परन्तु मुस्लमानों द्वारा आविष्कृत, प्रदत्त आधुनिक मिश्रित संगीत का जो रूप आज हमारे सामने है वह भी कम रोचक नहीं है। अतः यह कहना कि मुस्लमानों ने भारतीय समाज एवं संगीत–जगत को कुछ नहीं दिया, गलत होगा। मुसलमानों की भारतीय संगीत को प्राप्त महत्वपूर्ण देन के कारण ही हम आज भी उन मुगल बादशाहों का नाम आदर से लेते हैं जिन्होनें भारतीय संगीत के प्रचार–प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। यदि मुगल चाहते तो भारतीय संगीत को जड़ से समाप्त कर, अपना ईरानी, अरबी संगीत भारतीय संगीत को जड़ से समाप्त कर, अपना ईरानी, अरबी संगीत भारतीय समाज में लागू कर सकते थे। परन्तु भारत की संपूर्ण आजादी बाद भी इतने वर्ष बीतने पर भी मुसलमानों द्वारा भारतीय संगीत को मिले योगदान को याद करना ही, अपने आप में सभ प्रश्नों का सच्चा उत्तर है।

संदर्भ सूची

1. अमनदास शर्मा, मुस्लमान और भारतीय संगीत
2. पंडित अहोबल, संगीत परिजात
3. उमेश जोशी, भारतीय संगीत का इतिहास
4. डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग, निबंध संगीत